(ख) इंद्र जिम जंभ पर, बाड़व स अंभ पर, रावन सदंभ पर रघुकुलराज है।
पौन बारिवाह पर, संभु रतिनाह पर, ज्यौं सहस्त्रबाहु पर राम द्विजराज है।
दावा द्रुमदंड पर चीता मृग झुंड पर भूषन बितुंड पर जैसे मृगराज है।
तेज तम-अंस पर कान्ह जिम कंस पर, यौं मलेच्छ-बंस पर सेर सिवराज है। (शिल्प-सौंदर्य)

(ग) साईं बैर न कीजिए, गुरु, पंडित, कवि, यार
बेटा, बनिता, पँवरिया, यज्ञ करावन हार
यज्ञ करावन हार, राजमंत्री जो होई
विप्र, परोसी, वैद, आपको तपै रसोई
कह गिरिधर कविराय, युगनते यह चलि आई
इन तेरह सों तरह दिए, बनिआबै साईं।। (नीति-सौंदर्य)

(घ) पहले अपनाय सुजान सनेह सों क्यों फिरि नेह कै तोरियै जू।
निरधार अधार है धार-मँझार दई गहि बाँह न बोरियै जू।
घनआनंद आपने चातिक कों गुन-बांधिलैं मोह न छोरियै जू।
रस प्याय कै ज्याय बढ़ाय कै आस बिसास मैं यौं बिष घोरियै जू।।
(रस-व्यंजना)

(6+6=12)

[This question paper contains 4 printed pages.]

24/05/2023 morning Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 3835 E

Unique Paper Code : 12051202

Name of the Paper : हिन्दी कविता (रीतिकालीन काव्य) Hindi Kavita (Reetikaleen Kavya)

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi – CBCS**

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. केशव रचित 'रामचन्द्रिका' के भाव-सौन्दर्य पर प्रकाश डालिए।

अथवा

रहीम के दोहों का प्रतिपाद्य लिखिए। (12)

2. बिहारी के काव्य में अभिव्यक्त शृंगार-भावना का विश्लेषण कीजिए।

अथवा

बिहारी के काव्य-सौन्दर्य का सोदाहरण विवेचन कीजिए। (12)

3. घनानंद के काव्य में अभिव्यक्त सौंदर्य-चेतना का विवेचन कीजिए।

अथवा

"घनानंद 'प्रेम की पीर' के गायक हैं।" स्पष्ट कीजिए। (12)

4. भूषण की काव्य-भाषा का विवेचन कीजिए।

अथवा

गिरिधर कविराय के काव्य में व्यंजित नैतिक आदर्शों पर प्रकाश डालिए। (12)

5. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) राजत रंच न दोष युत कविता बनिता मित्र।
बुंदक हाला परत ज्यौं गंगाघट अपवित्र।

अथवा

पावस देखि रहीम मन, कोइल साथे मौन।
अब दादुर बक्ताभए, हमको पूछत कौन।
रहिमन प्रीति न कीजिए, जस खीरा ने कीन।
ऊपर से तो दिल मिला, भीतर फाँके तीन।। (8)

(ख) मेरी भव-बाधा हरौ, राधा नागरि सोई।
जा तन की झाँई परैं, स्यामु हरित-दुति होई।
रनितभूंग-घंटावली, झरित दान मधु-नीरु।
मंद-मंद आवतु चल्यौ, कुंजरु कुञ्ज-समीरु।

अथवा

रावरे रूप की रीति अनूप नयो नयो लागत ज्यौं-ज्यौं निहारियै।
त्यौं इन आँखिन बानि अनोखी अघानि कहूँ नहिं आन तिहारियै।
एक ही जीवन हुतौ सु तौ बारयौ सुजान संकोच और सोच सहारियै।
रोकी रहै न दुई घनआनंद बावरी रीझ् के हाथ निहारियै।
(7)

7. दिये गये निर्देशों के आधार पर किन्हीं **दो** अवतरणों का रचना-कौशल (लगभग **150** शब्दों में) उद्घाटित कीजिए :

(क) घाम घरीक निवारियै, कलित ललित अलि-पुंज।
जमुना-तीर तमाल-तरु-मिलित मालती-कुंज।।
उन हरकी हँसी कै, इतैंडन सौंपि मुसकाइ।
नैन मिलैं मन मिलि गए दोऊ, मिलवत गाइ।।
(भाव-सौंदर्य)